विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 11 नवंबर 2020

वर्ग सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित।

अर्थ सहित

सार्थः प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः ।
आतुरस्य भिषक् मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः ॥4॥

(युधिष्ठिर)-प्रवास में रहने वाले का मित्र या साथी धन होता है।
घर में रहने वाले का मित्र पत्नी होती है।
रोगी का मित्र वैद्य होता है। मरने वाले का मित्र दान होता है।

किंस्विदेकपदं धर्म्य किंस्विदेकपदं यशः?
किंस्विदेकपदं स्वर्यं किंस्विदेकपदं सुखम् ?

एकमात्र धर्म क्या है? एकमात्र यह क्या है ?
एकमात्र स्वर्ग क्या है? एकमात्र सुख क्या है?

दाक्ष्यमेकपदं धर्मं दानमेकपदं यशः।
सत्यमेकपदं स्वर्यं शीलमेकपदं ससुखम्।।

दक्षता योग्यता एकमात्र धर्म है।

दान मात्र एक यश है।

सत्य एकमात्र स्वर्ग दिलाने वाला है।

सदाचार एकमात्र सुख है।